॥ प्रस्तावना ॥

प्रगट हो कि यह स्तवन तरंगिणी ग्रंथ का द्वितिय तरंग सत्तपशमदमसँय्यमाघलङ्कृत श्रीमज्जैनाचार्य्य पूज्यवर धर्म्मदास जी महाराज के संप्रदायानुयायी विद्वद्वर्य्ये पूज्यवर श्री १००८ श्री मगनमुनि जी महाराज तच्छिष्य श्रीमज्जैन धर्म्मोपदेष्टा माधव मुनि जी ने भजनानन्दी सज्जनों के ज्ञान लाभार्थ अति परिश्रम से रचा है इसके छापने मे यदि प्रामादिक अशुद्धियां रही होयं तिन्हें सुज्ञ जन शुद्ध कर बांचेगे यह हमारी विनय पूर्वक प्रार्थना है किमधिकम् ।

इस पुस्तक को अविनय खुले मुख तथा दीपक की सहायता से न बांचना चाहिये ॥

निवेदक—बलवन्तराय—प्रधान

जैन सभा आगरा

॥ विज्ञापन ॥

सभा में निम्न पुस्तक बिक्रीयार्थ उपस्थित हैं ।

स्तवनतरङ्गिणी पहिला भाग	—)
स्तवनतरंगिणी द्वितीय भाग	=)
श्रीप्रदेशी चरित्र	—)
दशवैकालिक पाठ	I)
सामायक सूत्र	)II
सामायक प्रतिक्रमण सूत्र	=)
बारहभावना सँग्रह	)III
गुल्दिस्ताजैन भजनमाला उर्दू	—)II
नेकवदकी तमीज जैन प्रकाश	—)
जैन धर्म के नियम	)II

पता पुस्तकाध्यक्ष साधुमार्गी जैन
उद्योतनी सभा मानपाड़ा आगरा.
पता सेठ जसवन्तराय
आगरा

॥ श्रीमद्वीरायनमः

॥ अथ लावनी रंगत लँगडी ॥

सकल इष्ट मांहिं विशिष्ट उत्कृष्ट पंच परमेष्टि विचार ॥ याकी महिमां अगम सुरगुरु मुनि कहत न पावें पार ॥ टेर ॥ गुण अनंत परमेष्टि प्रभू के पै शैंत अष्टोत्तर परधान । सुमरण तिनका करो सब जीवहिरिदेमें धर के ध्यान॥ तरु अशोक सुर सुमनवृष्टि दिव्यध्वनि चारु चमर जुग जानें ॥ फटिक रतन को लसे सिंहासनें भामंडल ज्यूंभानें ॥ तीन छत्र पर छत्रें देवें दुंदुभी येवसु भति हार्य्य वखान ॥ अपाये

अयगम्य ज्ञान वचै पूजा ये अतिशय चतु मान ॥ द्वादश गुण ये बडे देव अरिहंत प्रभूके भवि उरधार ॥ याकी० ॥१॥ ऋद्ध सिद्ध नव निद्ध प्रगट होय पलक मांहिश्री सिद्ध जपंत ॥ वसुगुण जिनके सुमरिये प्रात उठ भवि बेठ इकंत ॥ ज्ञान अनंतै अनंतही दर्शनै है सुख अव्याबाधि अनंतै॥ रागद्वेष से भिन्न ताते प्रभु खायक समकित वंतै ॥ अचल अमूर्त्तिक अगुरुलघू गुण कर राजे श्री सिद्ध महंत ॥ शक्ति अनंती अनंते ज्ञान बान कोउ लखें सुसंत ॥ ये वसु गुणकर युक्त मुक्त भगवँत नमो नित वारँवार॥ याकी० ॥२॥ पंचेन्द्रीवश करें ब्रह्म व्रत धरें बाडनवसे मुं विसाल ॥ मूं कें

चारौं कषायन को[१८] रहैं उपशम रसमैं लाल॥ पालैं पंच महाव्रत निर्मलैं[२३] । पंचा चारनके प्रतिपालैं ॥ पंच समित को सदा उपयोग सहित पालैं उजमाल[३३] ॥ मन वच तन को गोपं निश दिन[३६] निज आतम हित दीन दयाल ॥ ये छत्तीसों सुगुण युत आचारज भजिये तिरकाल ॥ धरे ध्यान जो भव्य भावधर सो पावे सुख सँपति सार॥याकी० ॥३॥ जस समीप अध्येन करैं जिन आगम को मुनि हित चितलाय ॥ पाठक ऋषि सो कहीं जैं तस पग वंदत पाप पलाय ॥ ग्यारह अंग उपंग दुवादश आप पढैं अरु देत पढाय[२३] ॥ चरण सित्तरी करण सित्तरी को इमहिज दैं समुझाय[२५] ॥ ये पच्चीस गुणों

कर राजें सो मुनिवर कहियें उवझाय ॥
सुमरण तिनका करै तिहूंकाल तास त्रिभु
वन वशथाय ॥ है अद्भुत अतिशय कारी
सुमरण पेको जाने नरनार ॥याकी०॥४॥
पंच महाव्रत निर्मल पालें शुद्ध भावना
सहित समन्न ॥ पँचेन्द्रिय को करें वंशचार
कषाय तजें मुनिजन्न ॥ भाव करण अरु
योग सत्य पुन सहें शीत आदिक वेदन्न॥
मन वच तन को धरें संमें दँसण णान
चरित संपन्न ॥ क्षमावँत वैराग्यवंत उपसर्ग
सहें मरणांतँ कठन्न ॥ सात वीश ये मूल
गुण धारी साधु कहें भगवन्न॥साधें स्वपर
कारज को ताते मुनि मनवँछित दातार॥

याकी० ॥ ५ ॥ सार चतुर्दश पूरव को यह भाख्यो आगम मांहि मुनीश ॥ अस सुमरण से भयो पल मांहि उरग अवनी को ईश ॥ आठ कोड वसु लाख आठ हजार आठसे आठ जपीस ॥ तीर्थंकर सो थाय इम ग्रन्थ मांहि गायो योगीश ॥ इमजानी उत्तम भव प्राणी जपो भक्ति भावें निशदीस॥ सत्तप शमकै धरण हारे सूरीश्वर मगन ऋषीश ॥ महामंत्र नवकार कहै मुनि माधव जपतां जय जय कार। ।याकी०।।६।।इति।।

॥ अथ कव्वाली ॥

॥ देऊं कोटि धन्य मैं ताहि जो बालापन संजम धारे ॥ जो बालापन संजम धारे जो निज आतम कारज सारे ।।देऊं०।।टेर।।

सुर धनु सम जानी संसार ।। त्यागे अहि केंचुकि अनुहार ।। चढते भावें संजमभार। लेने की मन मांहिं विचारे ।। देऊँ० ।।१।। त्यागी जगका माया मोह।।लेवे चारित धरैन छोह ।। राखै जरा न गुरु से द्रोह । जैसो लेतै सोही पारे ।। दे० ॥२॥ गुरु की सेवा करे हमेश ।। विचरै देश प्रदेश विपेश ।। देवे सत्य धर्म उपदेश आपन तिरै अवर को तारे ।। दे० ।। ३ ।। राखै प्रति दिन बढते भाव ।। पढने गुनने का चितचाव।। ऐसा लहिमानव भवदाव विषियन सुख मांटे नहीं हारे ।।दे०।।४।।स्वपर समय तनों होय जान तपस्या करै शक्ति परिमाण ।। पाले सुगुरु मगन मुनि आण माधव दोऊ

कुल उजवारे ॥ देऊं० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ गजल रेखता में ॥

बड़ा ये हे मुझे विष्मय रूप कैसा तिहारा है ॥ देवदेखे विविध विधिके न तेरा गुण निहारा है ॥ टेर ॥ कोइ तो पशु मुखी देवा लखे में प्रगट जग मांहीं ॥ गजानन्न षड़ानन सरिसे अजव जिन्न देह धारा है ॥ ब० ॥ १ ॥ पशू रूपी कोई देवा कच्छ ओ मच्छ बारा ही ॥ कोई तो जल अनल पूजें देव पीपल नियारा है ॥ ब० ॥ २ ॥ देव कोई पशू बाही चढ़े जो वृषभ आदिक पै ॥ नशे के लालची कोई जिन्हों को मद पियारा है ॥ ब० ॥ ३ ॥ कोई क्रोधी लखे देवा धरें जो शस्त्र निज करमें ॥ गदा कुंता धनुष बरछी किसी के कर कुठारा

है ॥ब०॥४॥ विषय के बश परे केई जिन्हों के सँग अर्द्धंगी ॥ कोई कामी रसिक नामी ने चेले संग दारा है ॥ब० ॥ ५ ॥ कोई तो चार भुजधारी कोई कें चार आनन हैं । देव कोई सहिंस शिरका धरसो धराणि भारा है ॥ब०॥६॥ सरागी सगुण युत येतो चरित से है प्रगट जाहिर ॥ सुन्यो तू तो सुगुरुमुख से निरागी निर्विकारा है ॥ब०॥ ७ ॥ सुगुरु श्री मगन चरणन को दास माधव कहे जपी ये ॥ देव देवाधि देवों का निरजन्नू निराकारा है ॥ ब० ॥ ८ ॥ इति ॥

अथ स्यान सुमति संवाद पद

राग रसिया की में ।

अजब गजब की बात कुगुरु मिल कैसो

वेश बनायोरी।टेर।मानो पेत शेत पट ओढन जिन मुनिको फरमायोरी।अ०।१।कल्पसूत्र उत्तराध्ययन में प्रगट पणें दरसायोरी।अ०। ।२। तो क्यों पीतवसन के सरिया कुगुरुनके मन भायोरी ॥ अ० ॥ ३ ॥ भिष्ट भये निर्मल चारित से तासे पीत सुहायोरी ॥अ० ॥४॥ नहीं वीर शाशन वरती हम यों इन प्रगट जतायोरी ॥ अ० ॥ ५ ॥ तोभी मूढ़मती नहीं समझे ताको कहा उपयोरी ॥अ० ॥ ६ ॥ रजो हरण को दंड अभेहित मुनिपट मांहिं छुकायोरी ॥अ० ॥७॥ तो क्यों आकरणांत दंड अति दीरघ करमें साह्योरी॥अ०॥८॥त्रिविध दँड आतम दंडानों ताते दंड रखायोरी ॥ ॥ अ० ॥९॥ मुंह पँतग मुख पै धारे विन

अवश प्राणि वध थायोरी ॥अ० ॥१० ॥ तो
क्यों करमें करपति धारी हिंसा धरम चला
योरी ॥अ० ॥११॥ विपत काल में वेश बदल
इन मांग मांग कर खायोरी ॥ अ०॥ १२ ॥
पडी कुरीत कहो किम छूटे पक्ष पात प्रगटा
योरी ॥ अ० ॥१३॥ क्या अचरज की बात
अली ये काल महातम छायोरी ॥अ०॥१४ ॥
ग्यान सुमति संबाद सुगुरु सुनि मगन
पसायें गायोरी ॥ अ० ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ पुनः ॥

॥ देखो पँचम काल कलू की महिमा
अजव निराली है॥ टेर॥ जो जो वातहोंय
या जुगमें वो कबहूँ न निहाली है ॥दे०॥१॥
तीन खंड को नायक ताको रूप बनावें जा

ली है ॥ दे० ॥ २ ॥ पामर नीच अधम जन
आगैं नाचैं दे दे ताली है ॥ दे० ॥३॥ पदमा
पतिको रूपधारकैं मांगैं फेरै थालीहै।दे०।४।
बनें मात पितु जिनजी के ये बात अचँभे
वाली है ॥दे०॥५॥जम्बू रूप बना के नांचें
कैसी पडी प्रनाली है ॥दे० ॥६॥ पुत्र पिता
को करें अनादर प्रीत सुसुर संग पाली है॥
॥दे०॥७॥ खारी लागें बहिन भानजी प्यारी
लागैं साली है ॥ दे० ॥ ८ ॥ माता सों कहैं
काम काजकर मेरी बहू अरवाली है।दे०।९॥
दूलहा साठ बरषका दुलहिन पांच बरष की
लालीहै ॥दे०॥१०॥ जान बूझ निज कन्या
को दें अंध कूपमें डालीहै।दे०।११।नारीधरम
करणमें लाजेंचरितरचे चरितालीहै।दे०।१२।

मात पितादि भरे पंचन में गावैं गहरी गाली है ॥ दे०॥१३॥धरम कथा सुनने की को कहे तो कहें का हम ठालीहै ॥दे० ॥१४॥ आला ढोला सुनैं हरषसूँ नारिभई नखरालीहै।दे०। ॥ १५ ॥ जाचक आयें कहें परें जा नहीं हाथ हम खालीहै ॥दे०॥१६॥ करैं कुसौनआपनौं अपुही मूढ प्रथा ये चाली है ॥दे० ।१७।चरम कारकें गाय वँधे घर बामन के घर छाली है ॥ ॥ दे० ॥ १८ ॥ प्रगट अविद्या देवी जी ने फूट घरों घर घाली है ॥दे०॥१९॥ करो किनारो बुध या जुगतें धरम धरण ल्यो झाली है।दे०। ॥२०॥ माधव अन होनी नहीं होवे भावी टले न टाली है ॥ दे० ॥ २१ ॥ इति ॥

—:-*❋*-:—

॥ अथ कव्वाली ॥

प्रतेप भाण समांन हमांन जो जगमें निज धर्म दिपावै ॥ जो जगमें जिन धर्म दिपावै वो जगमें जगनाथ कहावै ॥ टेर ॥ जिन भाषित आगम अनुसार॥ जिनवर धर्म करे परचार ॥ धारे शिर जिन आणाभार सोही जन जैनी कहलावै ॥ प्र० ॥ १ ॥ पर भावना अंग अव धार ॥ तन मन धन व्यय करै अपार ॥ आ-गम ग्रंथतनों भंडार करके विद्यालय खुलवा-वे ॥ प्र० ॥ २ ॥ उपदेशक जन कर तय्यार॥ भेजे देश विदेश मझार॥ जहँ पै नहीं साधु पयसार तँह पै दया धरम दरशावे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ दिक्षा लेवेंजोनरनारताकोदेवेविविधसहार॥परभवकी लेखरचीलारताकीदृहदिशकीरतिछावै॥प्र०॥

॥४॥राखन दया धरमकी कार ॥ त्यागे निज कुटुम्ब परवार ॥ ताको धन मानव अवतार जो मिथ्यामत दूर हटावै ॥प्र०॥५॥ श्रीयुत सुगुरु मगन अनगार। वँदो भवि नितवार हजार ॥ धरम दिपावन को इकरार करल्यो माधव छन्द सुनावै ॥ प्र० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ कव्वाली ॥

॥ सुनियें विनय कहूं है दीन भो खट काया के पीहरजी। भो खट कायाके पीहर जी सत्तप शमदमके सायरजी ॥ टेर॥ राख न दया धर्म्म की टेक ॥ सब जुर मिल हो जावो एक ॥ तज के आपस का व्यतिरेक निंदा कलह मान मद वरजी ॥ सु० ॥ १ ॥ स्व स्व संप्रदाय का गर्व ॥ तजके निर्णय

कीजे सर्व ॥ मोटो श्रीपर्यूषण पर्व जापै है समकित निर्भरजी ॥ सु० ॥ २ ॥ तजिये बिरथा खेंचातान ॥ जासै होय दिनों दिन हांन॥उन्नति दयातनी सब थांन कीजे संप खडग कर धरजी ॥ सु०॥ ३ ॥ आपस में द्यो विद्या दान ॥ वच्छल ताई का धर ध्यान ॥ बोलो प्राकृत में बुधवान अन्यों अन्य मिलो जहं परजी ॥सु०॥४ ॥ हिंसा धरम तनों परचार॥प्रति दिन बढतो जाय अपार॥याको करो कछू प्रतिकार बिलकुल बनों मती खुदगरजी॥सु०॥५॥स्वपर समय तनों होय जांन ॥ सोही मुनि दै अवशव खान ॥ यामें नहीं मान अपमान आगे सब मुनिगण की मरजी ॥ सु० ॥ ६ ॥ श्री

गुरु मगन चरण सुपसाय ॥ पायो रत्न त्रय सुखदाय ॥ माधव हाथ जोड शिर नाय करता सब सँतन सों अरजी ।सु०।७।इति।

॥ अथ गजल रेखता में ॥

॥ अविद्या प्रेतनी तैंने द्वंद कैसा मचाया है ॥ भुला के सुपथ से चैतन्न कुपथ मांहीं भ्रमाया है ॥टेक॥ सच्चिदानंद प्रभुतजके । उपल पूजन चलाया है॥ गोरि गोवर गधा-घूरों पेड़ पानी पुजाया ॥अ० ॥१॥ पुत्र के काज वलि देना महिष मेंढा मुरग अजकी॥ पतीकों छोड पर पति से पुत्र लाना बताया है॥ अ०॥२॥भोग भोगी वने जोगी दया की रीत जांने ना ॥ भंग गांजा चरस पीके

कहैं आनन्द आयाहै ॥अ०॥ ३ ॥ पुजाये कुगुरु ऐसेभी जिन्होंके धामधनदारा॥तिन्हों का मूढ लोगों को प्रगट झूँठा खबाया है॥ ॥अ०॥४॥पुत्रके पठन पाठन में खरच कौडी नहीं करना ॥ व्याह में वे अरथ धन को लुटाना तैं सिखाया है॥अ०॥५॥दयामें धर्म जग जानें मूढ से मूढ भी माने धरमके हेत हिंसा भी करो ये तैं सुनाया है ॥अ०॥६॥ धर्म जो होय हिंसा से फेर क्यों दया पाली जे॥ ध्यान देकें लखो वुध जन्न घोर अंधेर छाया है ॥ अ०॥ ७॥ सुगुरु श्री मगनमुनि ध्याई कहैं माधव अविद्याने॥धर्म का नाम लेलेके कर्म वँधन बढाया है॥अ०॥८॥इति॥

—*❃*—

॥ अथ लावणी रंगत लँगडी ॥

॥सुख सुभाग संपति शिवदाई स्वर्ग शैल सोपान समान॥सत गुरु भाख्यो सदा शुध भाव सहित दीजै भविदान॥टेर॥दान दियें दारिद्र नशे जश कीरत दह दिशमें छावे॥ प्रीत बढ़ावे विविध विध वैभव बिन उद्यम पावै ॥ आधि व्याधि दुख दोहग दुःकृत दूरटलैं भय विरलावै॥सब जग जाने विपत में दान दियो आडो आवै ॥ दानी जनको नाम जगतमें लेवैं सब कोई होत विहान॥ ॥स०॥ १॥ दान प्रभाव निधान मिलै गुण ज्ञान मिलै अति आदरसे॥बिन श्रम कीयें रसायन मिलै मिलै माणि माणि धरसे॥काम धेनु चिंतामिणि चित्रा बेलि मिलै जल धार

वर से ॥ नृप पद पावै भोग सुख क्रमतिरै भव सागरसे ॥ दान कृपाण धार कर दानी शूर हरें अघ अरि के प्राण ॥ स० ॥ २ ॥ पात्र दान दियें होय निर्जरा अथवा पुण्य बंध ह्वै जाय ॥ दुखित जनों के दियेसे पुद्ग लीक सुख भव भवथाय ॥ रिपु जन बैर तजैं दीये से सज्जन प्रीत करे चितलाय ॥ अनुचर भक्ती करै जश भाट बदै बश हो बैराय ॥ दान कोऊ निर्फलन होय पे सब से उत्तम अभय प्रधान ॥स० ॥३॥ अभय दानकी महिमा जिन आगम में वरणी अपरँपार ॥ गज भव मांहीं मेघनें देखो परत कियो संसार ॥ भयो मेघरथ षोडस मो जिन शांति नाथ सब जग सुखकार ॥ जस

सुमरण से आजहूं साता पामें सुमरणहार।।
मेतारज मुनि अभय दान दे निर्भय पद
पायो निर्वाण ।।स० ।। ४ ।। पेखो परतख
दान सुपातर है सुख संपति को दातार ।।
दे सुपात्र को दान सो भरै अगण्य पूण्य
भँडार ।। दान सुपात्र प्रभाव सुमनने पाई
ऋद्धि अचिंत्य उदार ।। सुरपति के सम्म
भोग भोगे नर भव में शालि कुमार।।दान
सुपात्रतनी महिमां को को कोविद करसके
बयान ।।स०।।५।। दूषण पंच पंचही भूषण
दान तने भाखे भगवन्न।।दूषण तजके सजो
भवि भूषण तिनका सुन बरनन्न।।विप्रिय
वचन बिना आदर अरुकर बिलम्बै देबिल
खबदंन्न ।। पीमाबैदे दानं ये दूषण पँचत

जो बुधजन्न ॥ दूषण सहित दान जो देवै
दान नहीं सोतो दुख खान । स० ॥ ६ ॥
निर्वद वस्तु चतुर्दश देवै निजकर सेती होय
प्रसन्न ॥ वहु आदर से दान दे करै सकल
दिनँ अनुमोदन्न ॥ भूषण पंच प्रकार कहे
ये सजो भव्य पाके नर तन्न ॥ दान धर्म
के हेत सब करचो तन मन धन अरपन्न॥
माधव दान महातम बरण्यो सुगुरु मगन
मुनि को धर ध्यान ॥ स० ॥७॥ इति ॥

॥ पुनः ॥

॥ सुरपति सानिध करें टरें सब सँकट पावै
स्वर्ग सलील ॥ शिव सुखदाई सुमति उर
आन अखँडित पालो शील ॥टेर॥ सीतके
जलसम होय अनल थल सम समुद्र होयसिंह

सियाल ॥ नाग छाग सम्म होय विकराल व्याल पुष्पन की माल॥ अति उतँग गिर उपल खंड सम होय बिकट वन नगर बिशाल अमृत सरिसो विषम बिष होय नृपति सम नर कँगाल ॥ कामदेव सम होय कुरूपी कल्प बृक्ष सम होय करील ॥ शि० ॥१ ॥ पिशुन पडे पगतलें छलैना ॥ भूत प्रेत व्यंतर बैताल॥दीठ मूठ ना लगे विन जतन कटें कोटिन जंजाल ॥ सूली को सिंहासन था बे वंधन भय भाजे तत्काल ॥ बिन भेष जहीं व्याधि बिरलाय थाय जय समर बिचाल ॥ फलै मनोरथ माल हाल ही करें हुकमकी सुर तामील ॥ शि० ॥२॥ अरि अरिष्ट होय नष्ट इष्ट सँजोग मिलै छलिया

न छलै ॥ आगम दरसै जगत मैं जगमग जश की ज्योति जलै ॥ प्रति दिन बढै प्रताप चोगुणो प्रबल पापकी ताप टलै ॥ दुरगति नाशै घोर उपसर्ग शमें वर वचन फलै॥पूरण तेज पराक्रम आयू पावे पावन थावेडील ॥ शि० ॥ ३ ॥ शीलवँत भगवँत बरोबर यामें नहीं संदेह लगार ॥ शुध मन पाले शील सो शीघ्र होय भव दधिसे पार॥बिन समकित परवश पाल्यो हू शील विरत सुरगति दातार ॥ सुगुरु मगन से सुन्यो इम सूत्र उवाई के मँझार ॥ माधव कहै मनष तन पाके पालो शील करो मति ढील ॥ शि० ॥ ४ ॥ इति ॥
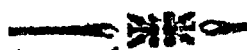
॥ पुनः ॥

॥ प्रबल पापदल दलन वज्रवर विपत विघन घन शमन शमीर ॥ तपदव सरिसो दहन भव विपन मदनमारन बडबीर॥टेर॥ अनशनादि तप तपत त्रिदशपति त्रिविधि सेव तिरकाल करैं ॥ खेट भेट ले मिलैं कर जोड भवन पति पांय परैं ॥ काज करैं विंतर किंकर सम विनय सहित अस्तुत उचरैं ॥ खग पत्ति ना मैं शीस अवनीश चरण में माथ धरैं ॥ अति अनंद अहमिंद करैं अभिवंदन कटैं करम जँजीर ॥ त० ॥ ॥ १॥ तप से सिद्ध होंय सब साधन मँत्र जँत्र और तंत्र जडी॥सफलित होवें ध्रियो वर पदमा पांयन रहे पडी॥प्रगट होय घट

ज्ञान भान सम खुलें शास्त्र की कडी कडी॥ रिद्ध अचिंती होय उतपन्न रहे सब बात बडी॥ जनम मरण भव व्याधि भयँकर भेटन तप औषधि अकसीर ॥ त० ॥ २ ॥ तप परिचय परतक्ष जगत में तप पसाय त्रिभुवन पतिथाय ॥ तप प्रभाव से पूज्य पद पायो हर केशी मुनिराय॥ द्रढ प्रहार तस कर तप सेती सदगति पामी कर्म खिपाय॥ अर्जुन माली लही पंचम गति तपही के सुपसाय॥ करम काठ काटने कुठार सम तप तापिये साहस धर धीर ॥ त० ॥ ३ ॥ नव कारसी आदि ले बरसी तपकी सरधा उर धारिये ॥ शक्ति प्रमाणें बनें सोही तप क्षमा सहित करिये॥ नरतन चिंता मणि समपाके ममत भाव

भवि पर हरिये ॥ तप धारी की सेव तनमन से कर भव दधितरियै ॥ माधव कहै मगन मुनि पद कज पर सत होय पवित्र शरीर॥ ॥ त० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पुनः ॥

॥दान शियल तप शम दम संयम नियम आंखडी विरत भजन्न ॥ बिना भावना वृथा सब जिम ऊषरमें मेघ पतन्न ॥ टेर ॥ नीरागी नर आगें निष्फल जिम कटाक्ष मृगनेंनी के ॥ बहिरे आगें वृथा जिम गीत मधुर पिकवेंनी के॥जनम अँध पति के आगें श्रृंगार विफल सुख लेनी के ॥ वृथासूमकीसँपदा सुपन विफलविनरेंनीके॥ दया बिना सब क्रिया अकारथ मनवश विन

जिम जोग वसन्न ॥ वि० ॥ १ ॥ भवना शनी भावना भ्रम भय हरणी जिनवर वरणी है ॥ भव अरणव में पोत सम स्वर्ग मोक्ष निस्सरणी है ॥ दाना दिक तिहुं धर्म कल्प तरु उपजन अनुपम धरणी है ॥ दिव शिव दाई करम वसु विध कतरण कर तरणी है ॥ तिरे अनंत भव्य भावन से कतिपय का कहियै वरणन्न ॥ वि० ॥ २ ॥ परसन चँदराज ऋषि पलमें पायो निरमल केवल ज्ञान ॥ मामरुदेवी भावना भाय लह्यो निश्चल निर्वाण ॥ कपिल केवली भयो क्षणक में दादुर पाम्यों देव विमान ॥ मुकुर भवन में भरत नृप पाम्यो पंचम ज्ञान निधान ॥ पायो पंचम सुरग पिरग एलानट मेटे जनम मरन्न ॥

॥वि०॥३॥जीरण सेठ सुरग द्वादश मैं पायो केवल भावन भाय ॥ अवर अनंते भव्य भवदधिसे तिरे भाव सुपसाय॥ विना भाव नहीं लाभ होय क्रय विक्रय में भी किये उपाय॥ इम जानी ने भावियुत दानादिक कीजे मन लाय॥माधवकहै सकल सुख दायक सुगुरु मगन मुनिको दरशन्न॥वि०॥४॥इति॥

॥ लावणी बहर खडी ॥

मणी मुकरको जो न पिछाने वो कैसा जौंहरी प्रधान॥ जो शठ जड चेतन नहीं जाने ताको किमकहियै मतिमान॥टेर॥जडमें चेतन भाव विचारें चेतनमें जड भाव धरें॥ प्रगट यही मिथ्यात्व मूढ वो भीम भवोदधि केम तरें॥ मुक्तगये भगवंत तिन्हों का फिर अज्ञानन

मुख उच्चरें ॥ करें विसर्जन पुन प्रभुजी का यह अद्भुत अन्याय करें ॥ दोऊ बिध अप मान प्रभूका करें कहो कैसे अज्ञान॥जो०॥ ॥ १ ॥ श्रुत इन्द्री जाके नहीं ताको नाद बजाय सुनावें गान॥चक्षु नहीं नाटक दिख लावें हाथ नचाय तोड कर तान ॥ जाके घ्राण न ताको मूरख पुष्प चढावें वे परमान॥ रसनाजाके मुख में नाहीं ताको क्यों चांढें पकवान ॥ फोकट भ्रम भक्ती में हिंसाकरें वो कैसे हैं इन्सान ॥जो०॥२॥ जव गोधूम चनाआदिक सव धान्य सचित जिन राज भने ॥ प्रगट लिखा है पाठ सूत्र सामायिक मांहीं वियकमने॥ दग्ध अन्न अंकुर नहीं देवै देखा है परतक्ष पणे ॥ तोभी शठ हठ

से बतलावे अचित कुहे तू लगा घणे ॥ अभि निवेश उन्मत्त अज्ञ को आवे नहीं शुद्ध श्रद्धान ॥ जो० ॥ ३ ॥ शुध श्रद्धान बिना सब जप तप क्रिया कलाप होय निस्सार ॥ बिन समकित चउदह पूरव के धारी जांय नरक मझार॥ है समकित ही सार पाय नर भव कीजे सत असत विचार ॥ सुगुरु मगन सुपसाय पाय मति माधव कहै सुनों नरनार ॥ तजकें पक्ष लखो जड चेतन व्यर्थ करो मत खेंचातान ॥ जो० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ लावनी अष्टपदी ॥

॥ब्रह्म ब्रत दिव शिव सुखकारी ॥ धन्य मुक्तजो पाले नरनारी॥टेर॥शील से सुख सम्पति

पावै ॥ विघन भय दूर ही टल जावै ॥ सुजश कीरति दह दिश छावै ॥ देवपति पग वँदन आवै ॥दोहा॥ जो शुध मनवच कायसे ॥ पाले शील रसाल ॥ सो कान्हड कठियारे के सम पावै मँगलमाल हालताको कहुँ विस्तारा ॥ ध० ॥१॥ अजुध्या नगरि मंझारो ॥ नृपति कीरति धर सुखकारो ॥ निधन पे मन मोहन गारो॥वसेतिहां कान्हड कठियारो ॥दोहा॥ भव जीवों के भाग्यसे॥ साधुतने परिवार॥ गामन गर पुर विचरत आया चउ नाणी अनगार धर्म उपदेश दियो भारी ॥ ध० ॥ २ ॥ श्रवण सुनभविजन सुखपायो ॥ भाग्य वश कान्हड तिहां आयो ॥ सुगुरु दर्शन कर हरषायो॥

नियम ल्यो मुनिवर फरमायो ॥ दोहा ॥ कान्हड कहै द्यो मोभनी ॥ शियल विरतनी आन ॥ पूणम के दिन पर नारी को मैं कीयो पचखान ॥ आज से साख सुगुरु थारी ॥ ध० ॥ ३ ॥ नियम ले वंदन कर भावैं ॥ धाम निज आयों चितचावैं ॥ विपन से दारु भारलावै ॥ नगर में वेचै अरुलावै ॥ ॥दोहा॥ इम अनुक्रम करतां थकां ॥ आयो वरषा काल ॥ घोर घोर घन वरषन लाग्यो नदी वहैं असराल विहग वोले वोली प्यारी ॥ ॥ ध० ॥ ४ ॥ कान्हरज्जू कुठार झाली ॥ ओढ सिरसे कामर काली ॥ चल्यो वन काटन तरु डाली ॥ धरणि पै हो रही हरियाली ॥ दोहा ॥ विषम नदी इक वाटमें ॥

पेख विलख मुख कान ॥ बैठ्यो तटनी तट पर सोचे व्यर्थ भयो हैरान ॥ करम गति टरै नहीं टारी ॥ध०॥५॥ कान्ह फिर साहस दिल धरके ॥ लियो इक लक्कड जल तर के ॥ तास के खँड खँड करके ॥ बांधलई मोली मन भरके ॥ दोहा ॥ आयो नगर वजार में ॥ वेचन के हित कान ॥ तिन अवसर तिन नगर में सजी श्री पति सेठ सुजान वसै शुध वारै ब्रत धारी॥ध०॥६॥ सेठनो चँपक अनुचरजी॥गयो वाजार हरष धरजी ॥ मिल्यो कठियारो कान्हरजी॥मोल ले भार चल्यो घरजी॥दोहा॥ चोखो चँदन वासना ॥ महिके गंध महांन ॥ तदपि काठ के मोल कान्ह ने ॥ बेच्यो विन पहचांन

सेठ लखि बोल्यो सुबिचारी॥ध०॥७॥कहो तुम चंपक परकासी ॥ मूल्य मो लीनों स्यूंथासी॥टका दोय दीजै सुखराशी ॥ दाम ले परो घरें जासी ॥दोहा ॥ कान्हड कठि- यारा प्रतें ॥ सेठ कह्यो समुझाय ॥ दिया सुनैया भार प्रमाणें॥ कान्हड हरषितथाय॥ अमित तन छाई हुसियारी ॥ ध० ॥८॥ अंगमें फूल्यो नहिंमावै॥द्रव्य ले निज घर कोजावै ॥ एक वेश्यां लखि ललचावै ॥ द्रव्य से अनरथ ही थावै ॥ दोहा ॥ गणि का बैठि गोख में ॥ नट विट लंपट साथ॥ कान्हड लखि रसिया हंसि बोले यो आयो तुझनाथ करैगो क्यों हमसे प्यारी॥ध०॥९॥ श्रवण सुन वचन क्रोध खाके॥ वेग वेश्यां

के ढिंग जाके ॥ दियो सब धन अमरस पाके गये रसिया सुख बिलखाके ॥दोहा॥ देख द्रव्य गणिका उठी ॥ आई मन सुखधाय ॥ आगे आवो प्राणशरजी धन तुम तुमरी माय विहसि गल गल वैंय्यां डारी॥धं०॥१०॥ नायका नापित तेडायो॥क्षौर अरु उवटन करवायो ॥ सुगंधित जल से न्हवरायो ॥ कान्ह मन परमानंद पायो ॥ दोहा ॥ पट भूषण पहिरायकें ॥भोजन सरस जिमाय॥ देताम्बूल प्रेम अति पोख्यो हाव भाव दर साय ॥ चढी ले जाय चित्रसारी ॥ध०॥११॥ सहेली सबरी बुलवाई॥ आप शृंगारित हो आई ॥ रागना नाटक कर गाई ॥ केल कौ सलता दिखलाई ॥ दोहा ॥ कामलता मन

मोहनी ॥ अद्भुत रूपारेल ॥ शची होय सर मितत्तस आगें कंचन की सी वेल कमल नयनी काम न गारी ॥ ध० ॥१२॥ कान्ह के वदन मदन छायो ॥ करण रति को स्यांसे चायो ॥ एतलें शशि धर दीख्यायो ॥ इंदु लखि नियम याद आयो ॥ दोहा ॥ पून मेरें दिन में कियो । परनारी परिहार॥अव सर आये कदियन लोपूँ ॥ सुगुरु वचनकी कार त्याग तो ज्यां हो सी ख्वारी॥ध०१३। दिसा कोमिस वनांय सट क्यो ॥ घनों हीं वेश्या नें हट क्यो ॥ दियो वेश्यां को वेश पट क्यो ॥ मध्य वाजारें जा खट क्यो ॥ ॥ दोहा ॥ निज पट ओढी सोगयो ॥ सूँनीं देखी हाट ॥ विलख वदन को स्यां कान्हड

की ऊभी जो वे वाट हाथ लियें कंचन की झारि ॥ध०॥१४॥ भयो परभात निशावीती॥ कान्ह आयो न जुडो प्रीती ॥ हती वेश्या के यें रीती ॥ मुफत धन परको नां छींती ॥दोहा॥ नियम आपनो पालवा ॥ ले गणि का सब लार ॥ कान्हड मू क्यों ते धन जइने मेल्यो नृप दरवार ॥ विनय कर बात कही सारी ॥ ध० ॥ १५ ॥ बात सुन नृप विषमय आंन्यों ॥ केम वह पुरुष जाय जा न्यों ॥ करण निर्णय दिलमें ठांन्यों ॥ बुला यो अनुचर मन मान्यों ॥ दोहा ॥ पुरमें पड ह पिटावियो ॥ सुनलीजो सहुकोय ॥ काम लताके घर धन तजके भाग गयो जे होंय॥ प्रगट सो होवे इनवारी ॥ध०॥१६॥आय तव

कान्हड कठियारो कहै यो द्रव्य अछे म्हारो॥ अहो अनुचर मति किलकारो॥ वात मोरी यह अवधारो॥ दोहा॥ किंकर कर पकडी करी॥ लेगयो नरपति पास॥ कान्हड से नृपनें इम पूछी एतो धन तुझ पास केम आव्यो वादल फारी॥ध०॥१७॥ कहै तव कान्हड कर जोरी॥ विनय भूपति सुनियें मोरी॥ सिरी पति सेठ धरम धोरी॥ दियो तिन धन मोय भर झोरी॥दोहा॥ ते धन वेश्यां कों दियो॥ मैं मन आंनी मान॥ पूरण शशि लखि मिस कर नाठ्यो पाल्यो मैं पचखान बुलायो श्रीपति व्यापारी॥ध०॥१८॥ नृपति से श्री पति इम भासे॥ नियम मैं लियो सुगुरु पासे॥ ठगूंना मैं पर धनता से॥ करू सब कारज

करुणा से ॥ दोहा ॥ चँदन भारो वेचवा॥
कान्हड आयो स्वाम ॥ चंदन सम कँचन
में दीधो ॥ राखन ब्रत अभिराम भई वेश्यां
भी इकरारी ॥ध० ॥१९॥ बात सुन सब धन
भू धवने॥दियो कान्हड को हरष घने॥प्रसंसा
कीनी सब जनने॥एत लें वन पालक पभने॥
॥दोहा॥ज्ञानी गुरू समो सरया॥चालो वँदन
राज ॥ प्रमुदित है राजा गयो सजी ॥ मुनि
वंदन के काज साथ ले सारी सरदारी ॥ध०॥
।२०।करें नृप परसन पग लागी॥कोंन चारोंमें
सोभागी॥कहें मुनि चारों ही त्यागी॥अधिक
है कान्ह धरमरागी॥दोहा॥साधरमी लखि कान्ह
को॥दियो सचिव पदसार॥कान्हड राज ऋद्धि
सुखभोगी लीयो संजम भार भयो सुर एका भो

तारि ध०॥२१॥एम जानी बुध जन प्रानी॥
तजोधन दारा दुखदानी ॥शील ब्रत पालो
मन आनी वृथा मत खोवो जिंदगानी॥दोहा॥
कान्हड मुनि गुण गावतां ॥ सुख सम्पति
सरसाय ॥ सुगुरु मगन पद कज सुपसायें
माधव मुनि गुण गाय कहै त्यागी की बलि
हारी ॥ ध० ॥ २२ ॥ इति ॥

॥ अथ पद राग ठुमरी ॥

॥ परत्रिय पर संग सहे दुख जिन तिन
का कहूँ नाम सुना करकें॥टेर॥कुटम सहित
दारुण दुखपायो॥रावण सिया हरला करकें॥
लँक गमाय पँक परभामें पहुंच्यो प्राण गमा
करकें॥प०॥१॥ पूरण ताप सह्यो पद मोतर

द्रोपदि को हरवा करकें॥कीचक नींच भींच
कर मारयो भीम भेष त्रियका करकें ।प०।२।
हांसा और महांसा के हित मुझ मरयो तनता
करकें ॥ मनरथ भूवो मयनरहा लखि अन
रथ का फल पा करकें ॥प०॥३॥ राज सुता
के काज रुद्र द्विज मरयो रीछ वश जाकरकें॥
अवर अँनते जीव कुगति गए जग में कुजस
बढा करकें ॥प० ॥४॥ जो नर जितने पल
पर त्रियको निरखे नेह निधा करकें ॥ ताकों
तितने ही पल्यो पम तक मारें जमधाकरकों
॥ प०॥५॥पेख पराई खवारी परि हर परत्रिय
को भय खाकरके॥सुगुरु मगन सुपसाय पाय
मति माधव कहें समुझायकरकें॥प०।६।इति।

—*❋*—

॥ अथ लावनी बहिर खडी ॥

* अंतरालपा *

॥बुध जन पक्षपात तज पेखो व्यर्थ बनो मत मतवारे॥करो तत्व सर धान ज्ञान उर आन सुनों सज्जन प्यारे।टेर।कौंन कुगतिका कारण जग में जासे अवश कुगति जावै ॥ दुर्गति पड़ते प्राणी कों कहो कोन सुगति में पहुं-चावै॥को दातार हुवा इस जग में जसजश अज हूँ जग गावै॥कहो महा भारत में कौरव दल के हाथ कहा आवै॥डूबेंगे भव अरणव में को हिंसा धरम करण हारे॥क०॥१॥भीम भयानक विश्व विपनमें भय कोनसा कहाता हें॥कोंन हलाहल जग में जिसके खानेसें मर जाता है॥वतलावो बो रिपू कोंनसा जो नित

द्वंद मचाता है ॥ दारुण दुख क्या है दुनियाँ में जिससे जग दुख पाता है ॥ ज्ञानी कौन कहावै जो छल क्रोध मान तृष्णा टारे।क०। ।२।एकांतिक आत्यंतिकहित को चेतन का कहिये सुविचार॥सरण कौन भाख्यो जिन जीने इस अपार सँसार मझार ॥ अनुपम सुख वो कहो कौनसा जासे सुखी कहै अन गार॥कहो विज्ञवर अमृत क्या है कोटि ग्रंथ का कर निरधार॥नीरागीका कहो अप्रमत सत वच तोष दया धारे।क०।३।जँगम तीरथ को हैं जगमें कहो सुज्ञ जन देके ध्यान॥उत्तम धर्म दलाल हुवाको कहो जिना गम के परिमान॥ जिन शाशन का मूल कहा है मिलै न जाके बिन निर्वाण॥ऋषभ आदिक चौवीसों जिनने

कियो कहापा केवल ज्ञान॥सुगुरु मगन सुष साय कहै मुनि माधव विनय भव्यतारे॥ ॥ क॰ ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ होरी ॥

॥ पालोशील विरत सुख कारी ॥ सुनों सौभागिन नारी । टेर॥ सजो शियल शृँगार सलोंनी ॥ विषय विकार विसारी ॥ जानो तन धन जोवन चँचल ॥ चल दल नें अनुहारी ॥ बेलगयो मनडो बारी ॥ पा॰ ॥ ॥ १ ॥ पंचन की साखा सें परणी ते पियुनो रहो प्यारी । तासे और पुरुष को जानो ॥ रँक फकीर भिखारी ॥ होय जो सुर अवतारी ॥ पा०॥ २ ॥ नट खट नर लँपट लुच्चा से ॥ दूर रहो हरवारी ॥

काम कुतूहल क्रीडा कारी ॥ बात कहो ना उघारी ॥ हँसो मत दे दे तारी ॥पा०॥ ॥ ३ ॥ बाट घाट चिक चउक चच्चर में॥ एक लडी निर धारी ॥ तात भ्रात सम तुल्य हु नर से॥ करिये ना बात बिचारी॥ होय हक नाहक ख्वारि ॥ पा०॥४॥ विन कारण पर घर जाईने ॥ कीजे न थारी म्हारि ॥ पर धन सुत गृह पट भूषण लखि करियै ना ईर खारी ॥ गहो सँतोष पिटारि ॥ पा०॥ ५ ॥ पति परदेश गयां पद्म निको । तजवो सरस अहारी ॥ पट भूषण नूतन न पहरिवा॥ तीज त्योहार विनारी॥ न जावो बाग मझारि ॥ पा० ॥६॥ लाख बात की बात एक यह ॥ त्यागो चोरि

जारि ॥ सुध मन शील अराध्यां होस्यो॥ भब भब में सुखियारी ॥ कहै माधव सुवि चारी ॥ पा० ॥ ७ ॥ इति ॥

अथ पद राग चलत सोरठा ।

॥ इह भव परभव में दुख दाई क्रोध न कीजिये हो राज ॥ टेर ॥ क्रोध समान न वैरीजी को ॥ तन में रहै दहै तनही को॥ वाधक सुरग पुरी को श्रवण सुनी जिये होराज ॥ इ० ॥ १॥ क्रोध समान न विष जग मांहीं ॥ जस पसाय सुध वुध रहै नांहीं ॥ संकट सहै सदांहीं गति छिन छी-जियेहो राज ॥ इ० ॥ २ ॥ क्रोध कियां नर कालो थावै ॥ निज पर को पीडा उप

जावै ॥ हाथ कछू ना आवै इम ठाणि
लीजिये हेराज ॥ इ० ॥ ३ ॥ अल्प हु
क्रोध प्रचुर दुखदाई ॥ जिम तिण को
भारत भयो भाई ॥ क्रोधी कह्यो कसाई
कभुँ न पतीजिये होराज ॥ इ० ॥ ४ ॥
क्रोध रिदे में कुमति जगाडै ॥ प्रीत
पलक मांहीं विन साडै ॥ विधिकी बात
विगाडै प्रगट लखीजिये होराज ॥ इ० ॥
॥ ५ ॥ क्रोध कियां नारहै बडाई ॥
लज्जा लछमी जांय पलाई ॥ नाशे धीर
जताई किम सें वीजिये होराज ॥ इ० ॥
॥ ६ ॥ देखो महा अचंच कारी ॥ क्रोध
कियां दुख पायो भारी ॥ पेख पराई
ख्वारी अवश डरीजिये होराज ॥ इ० ॥

॥ ७ ॥ क्रोध कियां दुख लहै न असको॥ वजै विश्व में ढोल कुजसको ॥ इम जानी शमरस को प्यालो पीजेये होराज ॥इ०॥ ॥ ८ ॥ श्रीयुत सुगुरु मगन मुनि ध्याई माधव कहै सुनों चितलाइ ॥ सब जगको सुखदाई बात कहीजिये होराज ॥ इ० ॥ ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ पद राग सोरठ ॥

॥ मान न कीजै हो चतुर सुजान ॥टेर॥ मान विनय सुरतरु काटन को॥कातिल जान कृपाण ॥ सुजश शशी को कला निरोधन॥ परतख राहु समान ॥मा० ॥१॥ मान किये अपमान लहै नर ॥ आवैना गुण ज्ञान॥उप

श्रम रूपी थंभ उपाडन ॥ मान गजेंद्र पिछान ॥मा०॥२॥ मान महातमको विनशाडै॥मान घटावैकान॥वुध विद्या नैपुनता नाशन।मानौ मदिरा पान॥मा०॥३॥ मान कियां दशमुख दुख पायो॥कर कुल को अवशान॥दुर्योधन कोणिक आदिकर्णे दुरगति कीन पयान ॥ ॥मा०॥४॥इम जानी मार्दवता करके ॥ जी तो मान महान॥सुगुरु मगन सुपसाय पाय मति॥माधव करत वखान॥ मा०॥५॥इति॥

॥ पुनःपद ॥

॥पदम प्रभू पावन नाम तिहारो ऐ देशी लोभ सम को जगमें दुख दाई॥ जासों जावै सुजश वडाई॥टेर॥ पाप को बाप मोह विष

वृक्ष को मूल कह्यो मुनिराई ॥ पुण्य पयो
दधि शोषण कारण कुंभोद्भवकी नाई॥लो०।
॥१॥प्रगट प्रभाकर रोधन नीरदसमये थाई॥
ग्रसन विवेक शशी को राहू देखो दृष्टि लगाई
॥ लो०॥२॥कूड़ को कोष कलेश को कारण
दंभ की दीर्घन टाँई॥लाज लता उत पाटन
गज सम क्यों न तजोरे भाई ॥ लो०॥३॥
सूक्षम लोभहू है दुख दायक होय उदै जब
आई ॥ एका दश में जीव ठांण से देवै
प्रथम पठाई ॥ लो० ॥ ४ ॥ जिम जिम
लोभ होय तिम तिमही लोभ बढ़ँतो जाई॥
दो मासे के काज कपिल गयो कोटि से
तृपति न पाई ॥ लो० ॥ ५ ॥ लोभी
विषम विदेश में जावै गिनेना गिरि बन

खाई ॥ कृत्य कुकृत्य न देखै कोई ॥ करै कुकर्म अघाई ॥ लो० ॥ ६ ॥ अति को लोभ न कीजे प्राणी खारी पेख पराई ॥ लोभ पसाय लखो सागर गयो सागर मांहिं समाई ॥ लो० ॥ ७ ॥ पूरव पुण्य विना श्रम कीयें पावै न एकहु पाई ॥ इम जानी मन थिर चित आनो पुण्य करो उत्तसाई ॥ लो० ॥ ८ ॥ सुगुरु मगन मुनि पद कज पर सत जावे पाप पलाई॥ निर्लोभी मुनि को मुनि माधव वंदे शीस नवाई ॥ लो० ॥ ९ ॥ इति ॥

१ अगस्त २ मेघ ३ खजानो ४ कपट ५ स्तंभ

—:❀✳❀:—
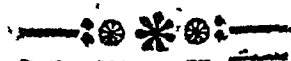
॥ लावनी ॥

॥ समझ मन माया दुख दाता ॥ माया के परसंग पलक में टूट जाय नाता ॥ ॥ टेर ॥ कुमति युवति गल माल मोह गज साल लखो भ्राता ॥ सत्य सूर्य्य के अस्त करण को सँध्या समख्याता ॥स०॥ ॥ १ ॥ कूड केल घर कुमति कोठरी धरम हरम दाता ॥ कसिन व्यसन उपजन की धरणी बरणी है ज्ञाता ॥ स० ॥ २ ॥ भय विभ्रम की खान करै पुम्बेद तनी घाता ॥ निवड कपट करणे से प्राणी पशु शरीर पाता ॥ स० ॥ ३ ॥ अविश वास को थानक ही दुर्ध्यान जनन माता रे मन मूरख शोच कपट कर को पायो

साता ॥ स० ॥ ४ ॥ निपट कपट कर झपट पराया धन जो ठग खात्ता ॥सो०॥ सो नर दिव शिव सुख से वंचित हो दुरगति जाता ॥ स० ॥ ५ ॥ कपटी जन का कुजश केतु[2] जग मांहीं फर्रात्ता ॥ इम जानी तज दीजे माया जो तू सुख चाता ॥ स० ॥ ६ ॥ सुख साथी संसार विपत में को आड़ा आता ॥ क्यों नाहक कर कपट मूढ मन मांहीं हर काता ॥ स० ॥ ७ ॥ चरण करण युत सुगुरु मगन मुनि सब जग जन ज्ञाता॥धाम मँडावर मांझ मुनी माधव इम समझाता ॥ सम० ॥ ८ ॥

॥ इति ॥

१ महल २ ध्वजा